

बुढ़ापे से बचाव की दवा पर उठे सवाल

यह देखकर कि लाल वाइन के सेवन से बुढ़ापे का असर कम करने में मदद मिलती है, एक कंपनी ने इस वाइन में से वह पदार्थ ढूँढ निकाला जो यह असर दिखलाता है। इस पदार्थ का नाम रेसवेरेट्रॉल है और दावा किया जाता है कि यह बुढ़ापे के असर को कम करता है। इस अणु की खोज सिट्रिस नामक कंपनी ने की थी और इसमें मुनाफे की बढ़िया उम्मीद के मद्दे नज़र ग्लेक्सोस्मिथक्लाइन ने इस कंपनी को खरीद लिया।

अलबत्ता इस दवा को लेकर शुरू से ही सवाल उठने लगे थे। सिट्रिस के वैज्ञानिकों का कहना था कि रेसवेरेट्रॉल शरीर में एक प्रमुख बुढ़ापा-रोधी प्रोटीन SIRT1 को सक्रिय कर देता है और यही इसके असर का राज़ है। उन्होंने प्रयोग में दर्शाया था कि जब एक अन्य अणु के साथ जोड़कर रेसवेरेट्रॉल को SIRT1 में मिलाया जाता है तो SIRT1 में कुछ परिवर्तन होते हैं और वह सक्रिय हो उठता है। इसकी सक्रियता को देखने के लिए SIRT1 के साथ एक ऐसा अणु जोड़ा जाता है जो SIRT1 के सक्रिय होते ही चमकने लगे। प्रयोग में देखा गया कि साथ में जोड़ा गया अणु चमकने लगता है। मगर अन्य शोधकर्ताओं ने जब इस प्रयोग को दोहराया तो पता चला कि साथ में जुड़ा यह अणु न हो तो SIRT1 सक्रिय नहीं होता।

इसका मतलब था कि प्रयोगशाला की परिस्थिति में तो रेसवेरेट्रॉल (चमकदार अणु के साथ जुड़ा होने के कारण) SIRT1 को सक्रिय करता है मगर वास्तविक परिस्थिति में ऐसा नहीं करता। इस बाबत काफी बहस चलती रही है। सिट्रिस के शोधकर्ताओं का मत है कि बगैर उस अणु के भी यह अपना काम करता है। उन्होंने यह भी कहा है कि संभव है कि शरीर में वही भूमिका कोई अन्य पदार्थ निभा देता होगा।

वैज्ञानिकों के बीच पूरे मसले पर काफी मतभेद हैं। जहां कई वैज्ञानिक मानते हैं कि चूहों पर किए गए प्रयोगों में रेसवेरेट्रॉल ने लाभदायक असर दिखाया है, वहीं वे यह मानने को तैयार नहीं हैं कि ये असर SIRT1 की सक्रियता की वजह से हुए होंगे। कई वैज्ञानिक कहते हैं कि यह साबित करना या इस बात को खारिज करना लगभग असंभव है कि रेसवेरेट्रॉल की क्रियाविधि में SIRT1 की सक्रियता का हाथ है या नहीं।

इस बीच यह दवा इंटरनेट पर धड़ल्ले से बेची जा रही है और संभवतः आम लोगों को इस वैज्ञानिक विवाद में इतनी रुचि नहीं है। उनकी रुचि तो यह जानने में है कि क्या यह सचमुच कारगर है। फिलहाल इस पर कोई स्पष्ट मत नहीं है। (स्रोत फीचर्स)